ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class VII

Subject- Hindi Second Languag

Topic-

By- नीलम सौंखला

©ISWK

SuccessCDs
'अपूर्व अनुभव'
लेखक – तेत्सुको कुरियानागी
SE

पाठ - 10 **अपूर्व अनुभव** (पाठ से संबन्धित बातें)

बच्चों, आज हम पढ़ेंगे जापान की प्रसिद्ध लेखिका **तेत्सुको कुरियानागी** द्वारा लिखा गया एक संस्मरण जो वास्तव में एक अद्भुत पाठशाला और उसमें पढ़ने वाले बच्चों की कहानी है|इस पाठशाला की अद्भुत बात यह थी कि यहाँ रेल के डिब्बों में कक्षाएँ लगती थीं , गहरी जड़ों वाले पेड़ पाठशाला का गेट और बच्चे इन पेड़ों की शाखाओं में खेला करते थे| इस अनोखे स्कूल के संस्थापक थे **श्री कोबायशी** | लेखिका **तेत्सुको कुरियानागी** स्वयं भी इसी स्कूल में पढ़ा करती थीं |लेखिका नें अपने बचपन के अनुभवों पर आधारित एक किताब लिखी है जिसका नाम है **'तोत्तो - चान'** और यह पाठ उसी पुस्तक से लिया गया एक छोटा सा अंश है |तो आइए देखते है लेखिका अपने बचपन और अपनी इस अद्भुत पाठशाला के बारे में और क्या

page-75

भावार्थ

इस कहानी में तोमोए विद्यालय मैं पढ़ने वाले दो बच्चों के बारे में बताया गया है| इस विद्यालय की अद्भुत बात यह है कि यहाँ हर एक बच्चे को एक-एक पेड़ दिया जाता है| वह पेड़ केवल उसी बच्चे का होता है और उसकी जब मर्जी हो वह उस पेड़ पर चढ़ सकता है|उस पेड़ को उस बच्चे की निजी संपत्ति माना जाता है | यदि किस
और को उस पेड़ पर चढ़ना हो
तो उसे बड़ी शिष्टता के साथ
उस बच्चे से पूछना होगा,
"क्या मैं अंदर आ जाऊँ?"

page-75

भावार्थ

तोत्तो-चान को जो पेड़ विद्यालय की ओर से मिला था वह मैदान(**ground**) के बाहरी हिस्से(**part**) में कुहोन्बुत्सु जाने वाली सड़क(**road**) के पास था| उसका पेड़ बहुत बड़ा था, लेकिन चढ़ते समय बार-बार पैर फिसलता(**slip**) था| लेकिन ठीक से चढ़ जाए तो ज़मीन से छह फुट की ऊँचाई पर स्थित द्विशाखा (**Bicameral**)तक पहुँचा जा सकता था| वह जगह किसी झूले(**swing**) सी आरामदायक(**comfortable**) थी|तोत्तो-चान अक्सर विद्यालय में खाने की छुट्टी के समय उस पेड़ पर चढ़ी हुई मिलती| वहाँ से वह दूर फैले हुए आकाश को या सड़क पर चलते लोगों को देखा करती थी|

भावार्थ

तोमोए में पढ़ने वाला हर बच्चा अपने पेड़ को अपनी निजी(**personal**) संपत्ति(**property**) मानता था| किसी दूसरे के पेड़ पर चढ़ने से पहले उसे शिष्टता(**Courtesy**) के साथ पूछना पड़ता था कि-"माफ़ कीजिए, क्या मैं अंदर आ जाऊँ?" इसी विद्यालय में पढ़ने वाला एक बच्चा जिसका नाम यासुकी-चान था, उसके लिए किसी भी पेड़ पर चढ़ना असंभव(**impossible**)) था क्योंकि उसे पोलियो(**Polio**) था| वह किसी पेड़ को अपनी निजी संपत्ति भी नहीं मानता था|तोत्तो-चान ने साहस (**courage**)का काम करते हुए,यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ने के लिए आमंत्रित(**invite**) किया था| यह बात दोनों ही बच्चों ने अपने माता-पिता को भी नहीं बताई थी| यदि उन्हें इस बात का पता चलता तो वे अवश्य ही दोनों को डाँटते|

page-76

भावार्थ

घर से निकलते समय तोत्तो-चान मैं अपनी माँ से झूठ(**lie**) कहा कि वह यासुकी-चान के घर डेनेनचोफु जा रही है| चूँकि तोत्तो-चान झूठ बोल रही थी, इसीलिए उसने माँ की आंखों में भी नहीं देखा और नजरें नीची किए अपने जूते के फीते(**shoelace**) को बाँधती(**to tie**) रही |रॉकी उसे स्टेशन तक छोड़ने उसके पीछे-पीछे आया तो, जाने से पहले तोत्तो-चान ने उसे सच बता दिया कि वह क्या करने जा रही है| स्कूल पहुँचने पर यासुकी-चान मैदान में क्यारियों (**flower beds**) के पास ही खड़ा मिला|

page-76

भावार्थ

गर्मी(**summer**) की छुट्टियों(**holidays**) के कारण पूरा स्कूल सुनसान(**Deserted**) पड़ा था|यासुकी-चान उससे एक वर्ष ही बड़ा था, पर तोत्तो-चान को वह अपने से बहुत बड़ा लगता था| जैसे ही यासुकी-चान नें तोत्तो-चान को देखा. वह पैर घसीटता (**Drag**) हुआ उसकी तरफ बढ़ा। दोनों ही आज बहुत उत्तेजित (**excited**) वे दोनों आज कुछ ऐसा करने वाले थे जिसका किसी को पता ना था| एक दूसरे से मिलकर वे दोनों हँस पड़े|

page-77

भावार्थ

तोत्तो-चान, यासुकी-चान को अपने पेड़ की ओर ले गई और उसके बाद जैसा कि उसने रात में ही सोंच रखा था ,वह चौकीदार (**watchman**) के घर से एक सीढ़ी घसीटती हुई ले आई| उसने उस सीढ़ी(**ladder**) को पेड़ के तने(**trunk**) के सहारे(**support**) ऐसे लगाया, जिससे कि वह द्विशाखा (**a branch further divided in two branches**) तक पहुँच जाए|तोत्तो-चान एक कुर्सी (**chair**) के सहारे ऊपर चढ़ी और उसने सीढ़ी को पकड़ लिया|फिर उसने यासुकी-चान को ऊपर चढ़ने के लिए कहा|

page- 77

भावार्थ

तोत्तो-चान को समझ में आ गया था यह काम इतना आसान (**easy**)नहीं है जितना वह समझ रही थी| वह सोंचने लगी कि अब आगे क्या किया जाए? तोत्तो-चान की हार्दिक(**hearty**) इच्छा(**wish**) थी कि यासुकी-चान उसके पेड़ पर चढ़े और यासुकी-चान भी यही चाहता था|यासुकी-चान का उतरा हुआ चेहरा(**face**) देखकर तोत्तो-चान को बहुत बुरा लगा और उसे हँसाने के लिए वह तरह-तरह की शक्ल(**face**) बनाने लगी| दोनों ही निराश हो गए थे|

page- 77

भावार्थ

अचानक(**suddenly**) तोत्तो-चान को एक तरकीब(**idea**) सूझी| वह चौकीदार के घर की तरफ दौड़ी और वहाँ हर एक चीज को उलट-पुलट कर देखने लगी| वहाँ उसे एक तिपाई (**tripod**) सीढ़ी मिली जिसे वह घसीटकर पेड़ के पास ले आई| वह पसीने(**sweat**) से भीग चुकी थी फिर भी किसी तरह उसने उस सीढ़ी को द्विशाखा से ऐसे लगा दिया, जिससे यासुकी-चान को सहारा देकर धीरे-धीरे सीढ़ी पर चढ़ाया जा सके|

page- 78

भावार्थ

यासुकी-चान कभी उस तिपाई-सीढ़ी की ओर देखता, तो कभी पसीने से भीगी हुई तोत्तो-चान की तरफ| यासुकी-चान ने पूरे दृढ़निश्चय (**Determination**) के साथ अपना पैर पहली सीढ़ी पर रखा| उन दोनों को ही पता नहीं चला कि यासुकी-चान को ऊपर चढ़ने में कितना समय लगा| सूरज की धूप(**sunlight**) उन दोनों पर पड़ रही थी,लेकिन दोनों का ध्यान तो केवल उस द्विशाखा तक पहुँचने में ही लगा हुआ था|सीढ़ी पर एक-एक पैर रखने में तोत्तो-चान पूरी तरह से यासुकी-चान की मदद(**help**) कर रही थी|यासुकी-चान ने ऊपर चढ़ने में अपनी पूरी शक्ति(**strength**) लगा दी और आखिरकार((**finally**) वह ऊपर पहुँच गया|

page- 79

भावार्थ

तोत्तो-चान सीढ़ी से छलाँग(**jump**) मारकर पेड़ पर पहुँच गई | लेकिन अचानक यहाँ उन्हें अपनी सारी मेहनत(**hard work**) बेकार लगने लगी क्योंकि अब यासुकी-चान को सीढ़ी से पेड़ पर लाना बहुत मुश्किल(**difficult**) लग रहा था| तोत्तो-चान को रोना(**crying**) आ गया, लेकिन वह रोई नहीं| उसे पता था कि उसे रोता देखकर यासुकी-चान भी रो पड़ेग|तोत्तो-चान ने यासुकी-चान का पोलियोग्रस्त(**Polioed**) हाथ अपने हाथ में थाम(**hold**) लिया| देर तक वह यासुकी-चान का हाथ पकड़ी रही|

page- 79

भावार्थ

थोड़ी देर में उसने यासुकी-चान से कहा कि तुम लेट(**laydown**) जाओ मैं तुम्हें पेड़ पर खींचने(**pull**) की कोशिश करती हूँ| उस समय अगर कोई और उन दोनों को इस तरह देखता तो वह जरूर डर(**scared**) के मारे चीख (**scream**) पड़ता, परंतु यासुकी-चान को तोत्तो-चान पर पूरा भरोसा(**believe**) था| दोनों ही बहुत बड़ा जोखिम(**risk**) का काम कर रहे थे|तोत्तो-चान अपने नन्हें -नन्हें हाथों से पूरी ताकत(**strength**) के साथ यासुकी-चान को खींचने लगी| काफी मेहनत के बाद आखिरकार दोनों एक-दूसरे के आमने- सामने पेड़ की द्विशाखा पर बैठे थे|

page- 80

भावार्थ

पसीने से लथपथ तोत्तो-चान ने सम्मान(**respect**) के साथ झुक(**bend**) कर यासुकी-चान से कहा कि," मेरे पेड़ पर तुम्हारा स्वागत(**welcome**) है|"यासुकी-चान ने भी मुस्कुराते(**smile**) और झिझकते(**hesitating**) हुए तोत्तो-चान से पूछा,"क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?" उस दिन पहली बार यासुकी-चान नें दुनिया की एक नई झलक(**glimpse**) देखी,जैसा उसने पहले कभी नहीं देखा था| उसने खुश होते हुए तोत्तो-चान से कहा,"तो ऐसा होता है पेड़ पर चढ़ना?" वहाँ बैठ कर दोनों देर

page- 80

भावार्थ

यासुकी-चान ने अमेरिका में रहने वाली अपनी बहन(**sister**) के बारे में बताते हुए कहा कि वहाँ टेलीविजन नाम की एक ऐसी चीज़ है जिससे हम घर बैठे सूमो-कुश्ती देख सकते हैं| यह डिब्बे(**box**) के आकार(**shape**) का होता है और जब यह जापान में आ जाएगा तो हम भी घर बैठे बैठे सूमो कुश्ती देख सकेंगे| उस वक्त तो तोत्तो-चान को यह बातें बिल्कुल भी समझ में नहीं आई कि आखिर इतना बड़ा सूमो पहलवान घर में रखे किसी छोटे से डिब्बे के अंदर कैसे आ सकता है|

page- 80

भावार्थ

उन दिनों जापान में टेलीविजन के बारे में कोई नहीं जानता था| यासुकी-चान ने ही सबसे पहले टेलीविजन के बारे में तोत्तो-चान को बताया था| तोत्तो-चान और यासुकी-चान पेड़ पर बैठे बेहद खुश(**very happy**) थे | यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला(**first**) और अंतिम (**last**) मौका (**chance**) था|

चत्र के आधार पर पाठ की व्याख्या --

तोत्तो-चान ने अपने पो लयो ग्रस्त मत्र यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ा कर साहस भरा काम कया था।

तोत्तो-चान की योजना के बारे में उसकी माता को पता नहीं था।

धन्यवाद